International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 960-961

हिन्दी भाषा : उत्पत्ति और विकास

किरण मयी
Assistant Professor, Department of Hindi, R.J.R. Degree College, Mahendergarh, Haryana, India

सारांश
संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है। ऋग्वेद से पहले भी संभव है कोई भाषा विद्यमान रही हो परन्तु आज तक उसका कोई लिखित रूप नहीं प्राप्त हो पाया। हिन्दी का विकास क्रम–संस्कृत–पालि–प्राकृत–अपभ्रंश–अवहट्ठ–प्राचीन/प्रारम्भिक हिन्दी है।
संस्कृतकालीन आधारभूत बोलचाल की भाषा परिवर्तित होते–होते 500 ई.पू. के बाद तक काफी बदल गई, जिसे 'पाली' कहा गया। महात्मा बुद्ध के समय में पाली लोक भाषा थी और उन्होंने पाली के द्वारा ही अपने उपदेशों का प्रचार–प्रसार किया। संभवतः यह भाषा ईसा की प्रथम ईसवी तक रही। पहली ईसवी तक आते–आते पालि भाषा और परिवर्तित हुई, तब इसे प्राकृत की संज्ञा दी गई। इसका काल पहली ई0 से 500 ई0 तक है। आगे चलकर, प्राकृत भाषाओं के क्षेत्रीय रूपों में अपभ्रंश भाषाएँ प्रतिष्ठित हुई। इनका समय 500 ई0 से 1000 ई0 तक माना जाता है। अपभ्रंश भाषा साहित्य के मुख्यतः दो रूप मिलते है– पश्चिमी और पूर्वी। अनुमानतः 1000 ई0 के आसपास अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से आधुनिक आर्य भाषाओं का जन्म हुआ। हिन्दी में साहित्य रचना का कार्य 1150 या इसके बाद आंरभ हुआ।

मूलशब्द : प्रतिष्ठित, उत्तराधिकारिणी, प्रतिरूप, योगात्मक, आविर्भाव, प्रवृत्ति, परिवर्तित।

प्रस्तावना
भारत में प्रमुख रूप से आर्य परिवार एवं द्रविड़ परिवार की भाषएं बोली जाती हैं। उत्तर भारत की भाषाएं आर्य परिवार की तथा दक्षिण भारत की भाषाएं द्रविड़ परिवार की हैं। उत्तर भारत की आर्य भाषाओं में संस्कृत सबसे प्राचीन है, जिसका प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में मिलता है, इसी की उत्तराधिकारिणी हिन्दी है।
आज हम जिस भाषा को हिन्दी के रूप में जानते है, वह आधुनिक आर्य भाषओं में से एक है। 'हिन्दी' वस्तुतः फारसी भाषा का शब्द हैं जिसका अर्थ हिन्दी का या हिंद से सम्बन्धित। हिन्दी शब्द की निष्पत्ति सिन्धु–सिंध से हुई है क्योंकि ईरानी भाषा में 'स' को 'ह' बोला जाता है। इस प्रकार हिन्दी शब्द वास्तव में सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है। कालांतर में हिंद शब्द सम्पूर्ण भारत का पर्याय बनकर उभरा हैं। इसी ''हिंद'' से हिन्दी शब्द बना।
अपभ्रंश से हिन्दी भाषा का जन्म हुआ। आधुनिक आर्य भाषाओं में जिनमें हिन्दी भी है, का जन्म 1000 ई0 के आस पास ही हुआ था, किन्तु उसमें साहित्य रचना का कार्य 1150 या इसके बाद आरंभ हुआ।

हिन्दी भाषा : उत्पत्ति और विकास
संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद हैं। ऋग्वेद से पहले भी संभव है कोई भाषा विद्यमान रही हो परन्तु आज तक उसका कोई लिखित रूप नहीं प्राप्त हो पाया। इससे यह अनुमान होता है कि संभवतः आर्यो की सबसे प्राचीन भाषा ऋग्वेद की ही भाषा, वैदिक संस्कृत ही थी।
भारत में मुख्य रूप से आर्य परिवार एवं द्रविड़ परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं। उत्तर भारत की भाषाएं आर्य परिवार की तथा दक्षिण भारत की भाषाएं द्रविड़ परिवार की है।
भारतीय आर्य भाषाओं के काल को मोटेतौर पर तीन कालखण्ड़ों में विभक्त किया गया है।
1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल (1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक)
2. मध्य भारतीय आर्य भाषा काल (500 ई.पू. से 1000 ई. तक)
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल (1000 ई. से अब तक)

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल
प्राचीन भारतीय आर्य काल में वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत दो भाषाएं थी। चारों वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद् इसी काल की रचना हैं, इनमें भाषा का एक रूप नहीं है। ऋग्वेद संस्कृत का प्राचीनतम ग्रंथ हैं। लौकिक संस्कृत में रामायण, महाभारत आदि लिखे गए।
इस काल की भाषा योगात्मक थी, शब्दों में धातु रूप सुरक्षित थे, भाषा संगीतात्मकता थी। शब्द भण्डार में तत्सम शब्दों की प्रचुरता थी।

2. मध्य भारतीय आर्य भाषा काल
इस भाषाकाल में तीन भाषाएं विकसित हुई।
1. पालि भाषा (500 ई.पू. से 1 ई. तक)
2. प्राकृत भाषा (1 ई. से 500 ई. तक)
3. अपभ्रंश भाषा (500 ई. से 1000 ई. तक)

पालि को मागधी भाषा भी कहा जाता है। यह बौद्ध धर्म की भाषा है। बौद्ध साहित्य पालि भाषा में लिखा गया है। त्रिपिटक पाली में लिखे गए हैं। त्रिपिटकों के नाम हैंः सुत्त पिटक, विनय पिटक, अभिधम्म पिटक।
प्राकृत भाषा बोलचाल की भाषा होने के कारण पंण्डितों में प्रचलित नहीं थी। संस्कृत नाटकों के अधम पात्र इस में लिखा गया हैं। प्राकृत भाषा के पाँच प्रमुख भेद थे।
1. शौरसेनी प्राकृतः– जो मथुरा या शूरसेन जनपद में बोली जाती थी। इसे मध्यप्रदेश की बोली भी कहा जाता है।
2. पैशाची प्राकृतः– यह उत्तर–पश्चिम में कश्मीर के आसपास की भाषा थी।
3. महाराष्ट्री प्राकृतः– इसका मूल स्थान महाराष्ट्र था।
4. अर्द्ध मागधी प्राकृतः– यह मागधी और शौरसेनी के बीच के क्षेत्र की भाषा थी।

5. मागधी प्राकृतः– यह मगध के आसपास प्रचलित भाषाओं ।

अपभ्रंश भाषा का प्रयोग 500 ई. से 1000 ई. तक हुआ। इस भाषा को अवहठ, अवहट्ठ, अवहत्थ, देशभाषा, देशीभाषा आदि अनेक नामों से पुकारा गया। अपभ्रंश का शाब्दिक अर्थ है– बिगड़ा हुआ या गिरा हुआ। जब भाषा का रूप सुसंस्कृत न रहकर बोलचाल का सामान्य रूप हो जाता है तो पण्डितों की दृष्टि में वह भाषा बिगड़ी हुई मानी जाती है। और तब वे उसे अपभ्रंश की संज्ञा देते हैं।

प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ. भोलानाथ तिवारी ने विभिन्न प्राकृतों से विकसित अपभ्रंश के निम्नलिखित सात भेद स्वीकार किए है, जिनसे आधुनिक भारतीय भाषाओं। उप भाषाओं का जन्म हुआ–

1. शौरसेनीः– पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती
2. पैशाचीः– लंहदा, पंजाबी
3. ब्राचड़ः– सिन्धी
4. खसः– पहाड़ी
5. महाराष्ट्रीः– मराठी
6. मागधीः– बिहारी, बांग्ला, उड़िया व असमिया
7. अर्ध मागधीः– पूर्वी हिन्दी

अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा का विकास अपभ्रंश के शौरसेनी, मागधी और अर्ध मागधी रूपों से हुआ है।

3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा कालः– (1000 ई. से अब तक) हिन्दी एवं अन्य आधुनिक आर्य भाषाएंः–

- 1100 ई. तक आते–आते अपभ्रंश का काल समाप्त हो गया और आधुनिक भारतीय भाषाओं का युग आरम्भ हुआ।
- जैसा कि पहले ही बताया गया है कि अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय स्वरूपों से आधुनिक भारतीय भाषाओं/उपभाषाओं यथा पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, लंहदा, पंजाबी, सिन्धी, पहाड़ी, मराठी, बिहारी, बांग्ला, उड़िया, असमिया और पूर्वी हिन्दी आदि का जन्म हुआ है। आगे चलकर पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी, पूर्वी हिन्दी और पहाड़ी पाँच उपभाषाओं तथा इनसे विकसित कई क्षेत्रीय बोलियों जैसे ब्रजभाषा, खड़ी बोली, जयपुरी, भोजपुरी, अवधी व गढ़वाली आदि को समग्र रूप से हिन्दी कहा जाता है।

कालांतर में खड़ी बोली ही अधिक विकसित होकर अपने मानक और परिनिष्ठित रूप में वर्तमान और बहुप्रचलित मानक हिन्दी भाषा के रूप में सामने आई।

निष्कर्षः

भाषा नदी की धारा के समान चंचल होती है। यह रूकना नहीं जानती, यदि कोई भाषा को बलपूर्वक रोकना भी चाहे तो यह उसके बंधन को तोड़ आगे निकल जाती है। यही भाषा की स्वाभाविक प्रकृति और प्रवृत्ति है।

संस्कृत भारती सबसे प्राचीन भाषा है जिसे आर्य भाषा या देव भाषा भी कहा जाता है। हिन्दी इसी आर्य भाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है।

आर्य भाषाओं का विकास क्रम इस प्रकार हैः–

संस्कृत–पालि–प्राकृत–अपभ्रंश–हिन्दी व अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएं।

हिन्दी भाषाका इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है।

संदर्भ

1. इंटरनेट।
2. समाचार पत्र, पत्रिकाए।
3. भाषा, विज्ञान और हिन्दी (डॉ0 नरेश मिश्र)।
4. डॉ0 अशोक तिवारी (प्रतियोगिता साहित्य)।
5. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास (डॉ उदयनाराण तिवारी)।